डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी

(6 जुलाई 1901 - 23 जून 1953)

सत्यमेव जयते
संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार

श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म एवं प्रारंभिक वर्ष

जन्म तिथि: 6 जुलाई 1901

- डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म सर आशुतोष मुखर्जी और श्रीमती जोगमाया देवी के घर हुआ था।
- उनका जन्म ब्रिटिश भारत के बंगाल प्रेसीडेंसी के कलकत्ता (अब कोलकाता) में 6 जुलाई 1901 को हुआ था।

प्रारम्भिक पृष्ठभूमि

- उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी कलकत्ता उच्च न्यायालय में न्यायाधीश और भारतीय शिक्षा जगत के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने दो बार कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्य किया।

- शिक्षा और सांस्कृतिक नेतृत्व में परिवार की गहरी भागीदारी ने उनमें ज्ञान, राष्ट्रीय पहचान और सार्वजनिक जीवन के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता पैदा की।

डॉ. मुखर्जी का घर, कोलकाता

डॉ. मुखर्जी का गृह कार्यालय, कोलकाता

व्यक्तिगत जीवन
विवाह की तिथि: 16 अप्रैल 1922

बीस वर्ष के आस-पास की उम्र में विवाह

- एम.ए. की पढ़ाई के दौरान, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कवि बिहारी लाल चक्रवर्ती की पोती सुधा देवी से विवाह किया।
- सुधा देवी रवींद्रनाथ टैगोर की संबंधी थीं।

विवाह का अंत- एक अपूरणीय क्षति

- 1934 में, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को गहरी व्यक्तिगत क्षति हुई, जब उनकी पत्नी सुधा देवी का 24 वर्ष की आयु में निमोनिया के कारण निधन हो गया।
- वे केवल 32 वर्ष के थे और उनके ऊपर अपने चार छोटे बच्चों के पालन-पोषण की जिम्मेदारी थी। उनकी भाभी तारा देवी ने बच्चों को स्नेह और अनुशासन के साथ पालने में मदद की।

सार्वजनिक जीवन के प्रति अटूट प्रतिबद्धता

- इस पीड़ादायी क्षति के बावजूद, डॉ. मुखर्जी ने सार्वजनिक सेवा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के साथ-साथ एक पिता के रूप में अपने कर्तव्यों को संभाला।

शैक्षणिक उपलब्धियाँ
एक प्रसिद्ध विद्वान (1)

1906

मित्रा इंस्टीट्यूशन, भवानीपुर शाखा में दूसरी कक्षा में प्रवेश लिया (23 जुलाई)

1917

मित्रा इंस्टीट्यूशन से मैट्रिकुलेशन परीक्षा उत्तीर्ण की, जिसमें उन्हें 10 रुपये प्रति माह की मेरिट छात्रवृत्ति मिलती थी।

1919

कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से कला में इंटरमीडिएट परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

1921

प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता से अंग्रेजी ऑनर्स में प्रथम श्रेणी में बी.ए. उत्तीर्ण।

1923

कलकत्ता विश्वविद्यालय से बंगाली भाषा और साहित्य में प्रथम श्रेणी में एम.ए. उत्तीर्ण।

शैक्षणिक उपलब्धियाँ
एक प्रसिद्ध विद्वान (2)

1924

- 23 वर्ष की आयु में उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय का फेलो चुना गया। उन्हें अपने पिता सर आशुतोष मुखर्जी के निधन के बाद उनके स्थान पर विश्वविद्यालय सिंडिकेट में नियुक्त किया गया।

1926

- डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी लिंकन इन में कानून की पढ़ाई करने के लिए लंदन गए थे। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के विश्वविद्यालयों के सम्मेलन में कलकत्ता विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करके जल्द ही अपनी अलग पहचान बना ली।

1927

- उनको 'कॉल टू द बार' मिला और वे भारत लौट आए।कलकत्ता उच्च न्यायालय में कानूनी प्रैक्टिस शुरू की, पहले वकील के रूप में और बाद में बैरिस्टर के रूप में।
- X

सार्वजनिक जीवन में पहला कदम

कांग्रेस के टिकट पर चुने गए

- 1929 में मात्र 28 वर्ष की आयु में, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में कलकत्ता विश्वविद्यालय निर्वाचन क्षेत्र से बंगाल विधान परिषद के लिए चुने गए।
- उन्होंने यह कदम राजनीतिक महत्वाकांक्षा के कारण नहीं, बल्कि विश्वविद्यालय के हितों और छात्रों के भविष्य की रक्षा के लिए उठाया।
- जब कांग्रेस ने 1930 में विधानमंडलों का बहिष्कार करने का निर्णय लिया, तो उन्होंने सिद्धांत के आधार पर इस्तीफा दे दिया।

स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में फिर से चुने गए, पार्टी लाइन से नहीं, बल्कि दृढ़ विश्वास से प्रेरित

- उसी वर्ष वे एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में फिर से चुने गए, जिससे उनके स्वतंत्र सार्वजनिक जीवन की शुरुआत हुई।

"Generally speaking, an Indian university must regard itself as one of the living organs of national reconstruction. It must discover the best means of blending together both the spiritual and the material aspects of life. It must equip its alumni irrespective of caste, creed or sex, with individual fitness, not for its own sake, not for merely adorning varied occupations and professions, but in order to teach them how to merge their individuality in the common cause of advancing the progress and prosperity of their motherland and upholding the highest traditions of human civilisation."

Dr. Syama Prasad Mookerjee

Youngest Vice Chancellor (33)

शैक्षणिक सुधार
पाठ्यक्रम और भाषा नीति

भारतीय भाषाओं पर प्राथमिकता और ध्यान

- ऐसा समय जब हर जगह अंग्रेजी का प्रभुत्व था, तब उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय की सर्वोच्च परीक्षा के लिए भारत की एक स्थानीय भाषा को विषय के रूप में पेश किया।
- उन्होंने बीए में हिंदी, बंगाली, उर्दू ऑनर्स और हिंदी की शुरुआत की और बंगाली में पीएचडी की भी अनुमति दी।
- उन्होंने बंगाली वर्तनी को मानकीकृत किया; वैज्ञानिक शब्दावली विकसित की।

शैक्षणिक रिसर्च के लिए नए विषय पेश किए

- कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने कृषि में डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू किया।
- उन्होंने न केवल चीनी और तिब्बती अध्ययन के लिए विभाग स्थापित किए, बल्कि भूगोल और इस्लामिक इतिहास को भी अकादमिक विषयों के रूप में पेश किया।

अतीत के अध्ययन का समर्थन करने के लिए संस्थानों की स्थापना की

- आशुतोष संग्रहालय की स्थापना की, पुरातात्विक कार्य शुरू किए।

इतिहास में पहली बार: दीक्षांत समारोह का বাংলা में संबोधन

स्थानीय भाषा का प्रयोग

- 17 फरवरी, 1937 को कलकत्ता विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली बार दीक्षांत समारोह का भाषण स्थानीय भाषा (बंगाली/বাংলা) में दिया गया।

नोबेल पुरस्कार विजेता टैगोर ने दीक्षांत समारोह में भाषण दिया

- डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर को स्नातकों से उनकी मातृभाषा में बात करने के लिए राजी किया।

भारतीय भाषाओं पर ज़ोर

- औपनिवेशिक परंपराओं द्वारा आकार दिए गए एक संस्थान में भारतीय पहचान का सांस्कृतिक दावा दिखाता यह एक प्रतीकात्मक क्षण था।
- यह एक साहसिक पुष्टि थी कि भारतीय भाषाएँ केवल भावाभिव्यक्ति का ही माध्यम नहीं हैं, बल्कि विद्वता, गरिमा और बुद्धिमत्ता का भी माध्यम हैं।

1937 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, तथा उनके साथ खड़े बंगाल के गवर्नर और चांसलर लॉर्ड ब्रेबोर्न।

शैक्षणिक सुधार
छात्र कल्याण और समावेशन

करियर एवं शिक्षा के क्षेत्र में नए कदम

- पहला कॉलेज कोड तैयार किया, आयु सीमा हटाई।
- कंपार्टमेंटल परीक्षाएं शुरू कीं।
- एक आधुनिक केंद्रीय पुस्तकालय बनाया।

क्षमता निर्माण और सशक्तीकरण पर ध्यान केंद्रित किया

- सिविल सेवा उम्मीदवारों के लिए कोचिंग शुरू की।
- शिक्षक प्रशिक्षण विभाग की स्थापना की।
- अल्पकालिक पाठ्यक्रम शुरू किए।
- महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया।
- छात्रों के लिए नौकरियों की सुविधा के लिए प्लेसमेंट सेल बनाया।

छात्र कल्याण: स्वस्थ और समावेशी

- डॉ. श्यामा प्रसाद ने अलग-अलग छात्रावासों को समाप्त किया; सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा दिया।
- उन्होंने स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रमों का विस्तार किया।

गर्व और भाईचारे की भावना

- उन्होंने छात्र-शिक्षक संबंधों को मजबूत करने के लिए विश्वविद्यालय स्थापना दिवस (24 जनवरी) की स्थापना की।

अपनी मातृभूमि से जुड़ने की परिकल्पना में मातृभाषा के प्रति उनका प्रेम अभिन्न रूप से शामिल था

असम में यात्रा और अनुभव

- डॉ. मुखर्जी ने असम भर में यात्रा की, इसकी संस्कृति से जुड़े और सामाजिक एकता और भाषाई गौरव के लिए अथक प्रयास किया।
- उन्होंने असमिया भाषा को राज्य की आधिकारिक भाषा बनाने का समर्थन किया।
- डॉ. मुखर्जी ने असम के सभी समुदायों से असमिया भाषा को अपनाने का आग्रह किया, उनका मानना था कि इससे विभिन्न क्षेत्रों और धर्मों के बीच समझ, सद्भाव और साझा पहचान को बढ़ावा मिलेगा।

कलकत्ता विश्वविद्यालय में असमिया भाषा की शुरुआत की

- 1935 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में उन्होंने असमिया भाषा की शुरुआत की। उनका मानना था कि हर भारतीय को असम के इतिहास, विरासत और स्वतंत्रता संग्राम में योगदान के बारे में जानना चाहिए।
- उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में पहली बार एक असमिया व्यक्ति को शिक्षक के रूप में चुना, जिनका नाम बिरिंची कुमार बरुआ था।

राजनीति की ओर बढ़ते कदम: विपक्ष की एक प्रभावशाली आवाज़

स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में निर्वाचित

- 1937 के प्रांतीय चुनावों में, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालय सीट से बंगाल विधान सभा के लिए एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुने गए।

सरकार में शामिल होने से इंकार

- उन्होंने सरकार में शामिल होने से इंकार कर दिया क्योंकि कांग्रेस द्वारा कृषक प्रजा पार्टी के साथ गठबंधन करने से इंकार करने के बाद मुस्लिम लीग ने मंत्रिमंडल का गठन किया था।

विपक्ष में मजबूत आवाज

- विपक्ष में रहते हुए वे संवैधानिक राष्ट्रवाद के लिए एक मजबूत आवाज के रूप में उभरे, जिन्होंने लीग के सांप्रदायिक शासन और लोकतांत्रिक मानदंडों के क्षरण को उजागर किया। यह अकादमिक जगत से राष्ट्रीय राजनीति की ओर उनके बढ़ते कदमों का एक स्पष्ट संकेत था।

एक राष्ट्रवादी मंच
हिन्दू महासभा में प्रवेश

राष्ट्रवादी आदर्शों से आकर्षित

- 1939-1940 के बीच, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी अखिल भारतीय हिंदू महासभा के राष्ट्रवादी आदर्शों से आकर्षित होकर उसमें शामिल हो गए।
- उन्होंने वीर सावरकर के नेतृत्व में कलकत्ता में 21वें अधिवेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कार्यकारी अध्यक्ष (1940-44) और बंगाल इकाई के प्रमुख के रूप में कार्य किया।

पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा करने वाले पहले व्यक्ति

- उनके नेतृत्व में, महासभा ब्रिटिश शासन से पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा करने वाली पहली पार्टी बन गई।

बंगाल के वित्त मंत्री
(1941-1942)

फ़ज़लुल हक़ की सरकार में वित्त मंत्री

- दिसंबर 1941 में, मुस्लिम लीग सरकार के पतन के बाद, फ़ज़लुल हक़ के नेतृत्व में बंगाल में प्रगतिशील गठबंधन ने कार्यभार संभाला।
- डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी इसके वित्त मंत्री बने, जो कैबिनेट में हिंदू महासभा के एकमात्र सदस्य थे।

राष्ट्रीय हित में निहित निष्पक्ष और व्यावहारिक दृष्टिकोण

- युद्धकाल के आर्थिक दबावों से निपटते हुए उन्होंने राजकोष के अनुशासन और संस्थागत अखंडता को बनाए रखा।
- उन्होंने नीति में सांप्रदायिक पूर्वाग्रह का दृढ़ता से विरोध किया। उनके नेतृत्व को व्यावहारिक, निष्पक्ष और राष्ट्रीय हित में निहित होने के लिए हमेशा सम्मान मिला।

जब कवि नज़रुल ने डॉ. श्यामा प्रसाद को आभार जताते हुए लिखा पत्र

जुलाई 1942

कवि नज़रुल बीमार थे और उनके परिवार के सदस्यों ने सरकार में शामिल उस दौर के कई प्रमुख लोगों से मदद मांगी, लेकिन उन्हें खोखली सांत्वना मिली।

श्यामा-हक गठबंधन सरकार में बंगाल के तत्कालीन वित्त मंत्री डॉ. मुखर्जी नज़रुल की गंभीर परेशानी सुनकर उनकी मदद के लिए फ़ौरन उपलब्ध हुए।

उन्होंने न केवल उनके इलाज का खर्च उठाया, बल्कि नज़रुल और उनके परिवार के लिए मधुपुर में मुखर्जी के देहात वाले घर में महीनों तक रहने की व्यवस्था भी की, जो उस समय बिहार में था और अब झारखंड में है।

कृतज्ञ नज़रुल ने उन्हें लिखा कि गठबंधन सरकार के सदस्यों में से वे उनका सबसे अधिक सम्मान करते हैं।

उन्होंने लिखा, ***"मैं जानता हूं कि हम ही भारत को पूरी तरह से स्वतंत्र करेंगे और उस दिन, [जब भारत पूरी तरह से स्वतंत्र होगा], बंगाली आपको और सुभाष बाबू को सबसे पहले याद करेंगे, आप इस देश के सच्चे नेता होंगे। "***

डॉ. श्यामा प्रसाद
मधुपुर के अपने घर में

बंगाल मंत्रिमंडल से इस्तीफा

दमन का विरोध

- अविभाजित बंगाल के वित्त मंत्री के रूप में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ब्रिटिश दमन के खिलाफ़ मजबूती से खड़े रहे, विशेष रूप से मिदनापुर में ।

सिद्धांत के आधार पर बंगाल मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया

- 12 अगस्त 1942 को वायसराय लिनलिथगो को लिखे एक पत्र में उन्होंने लिखा: "कांग्रेस की मांग... एक पूर्ण भारत की राष्ट्रीय मांग है...इस संकटपूर्ण समय में दमन कोई उपाय नहीं है।"
- उन्होंने 20 नवंबर 1942 को यह घोषणा करते हुए इस्तीफा दे दिया: "ब्रिटिश शासन के तहत प्रांतीय स्वायत्तता एक दिखावा मात्र है।"
- बाद में उन्होंने स्पष्ट किया: *"मेरा इस्तीफा मुख्यमंत्री या किसी सहकर्मी के साथ किसी मतभेद के कारण नहीं था, बल्कि यह सैद्धांतिक आधार पर दिया गया था।"*

1943 में बंगाल का मानव-जनित अकाल: नागरिकों के नेतृत्व में चलाया गया सबसे बड़ा राहत प्रयास

मृत्यु और मानव-जनित विनाश

- बंगाल में 30 लाख से ज़्यादा लोग बाढ़ या सूखे से नहीं बल्कि ब्रिटिश युद्धकालीन नीतियों, आपदाओं को छिपाने और तत्कालीन मुस्लिम लीग सरकार की आपराधिक उपेक्षा के कारण मारे गए।

धन का कुप्रबंधन

- नागरिक आपूर्ति के प्रभारी मंत्री एच.एस. सुहरावर्दी की घोर कुप्रबंधन और सांप्रदायिक पक्षपात के लिए व्यापक रूप से निंदा की गई।

नागरिकों के नेतृत्व में चला वृहद् राहत प्रयास

- जब राज्य की मशीनरी असफल साबित हुई, तो डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने किसी पद पर रहे बिना बंगाल के सबसे बड़े नागरिक नेतृत्व वाले राहत प्रयास की शुरुआत की।
- उन्होंने मिदनापुर से जलपाईगुड़ी तक पूरे प्रांत में निःशुल्क रसोई, दूध स्टेशन, मोबाइल अस्पताल और आश्रय स्थल स्थापित किए।
- जब महात्मा गांधी ने व्यक्तिगत रूप से उनकी सेवा के लिए उन्हें धन्यवाद दिया, तो उन्होंने बस इतना कहा: **"मैंने केवल अपना कर्तव्य निभाया है।"**

DAK EDITION VOL. V NO. 227 PRICE AS. 2

Dawn

Founded by QAED-E-AZAM JINNAH

Edited by ALTAF HUSAIN

DELHI: SUNDAY, AUGUST 18, 1946. 20 RAMAZAN, 1365 A.H.

UNIVERSITY LIBRARY 22 AUG 1946 ALIGARH

MAC FOR COOL BREEZE MAC WORKS QADIAN

Satisfaction ... Sialkot City

MUSLIM INDIA OBSERVES DIRECT ACTION DAY

"Never, Never"

NO RUSSIAN SHARE IN THE STRAITS

ANKARA, Thursday.

Shouts of "never, never," from Deputies greeted the announcement in the Turkish Assembly of the Soviet request for a direct share in the defence of the Dardanelles.

90 DEAD, 900 INJURED IN CALCUTTA CLASHES

MILITARY CALLED OUT IN BENGAL CAPITAL & BOMBAY

TRAFFIC IN BOTH THE

LIAQUAT ALI'S PAKISTAN-EFFORT CALL

Mr. Liaquat Ali Khan in an after-Juma written appeal called on the Muslims to be prepared "to resist by every means any Government imposed against our will".

A large gathering heard local Muslim League leaders explain the background to the League's Bombay resolution. League's green flag and placards calling on the Muslims to be ready for the fight adorned the walls

PT. NEHRU THREATENS TO SUPPRESS MUSLIM LEAGUE'S DIRECT ACTION

CONGRESS DETERMINED TO FORM INTERIM GOVT.

BOMBAY, Friday.

Pandit Jawaharlal Nehru, President of the Indian National

1946 के कलकत्ता हत्याकांड की
समाचार-पत्र की कतरनें

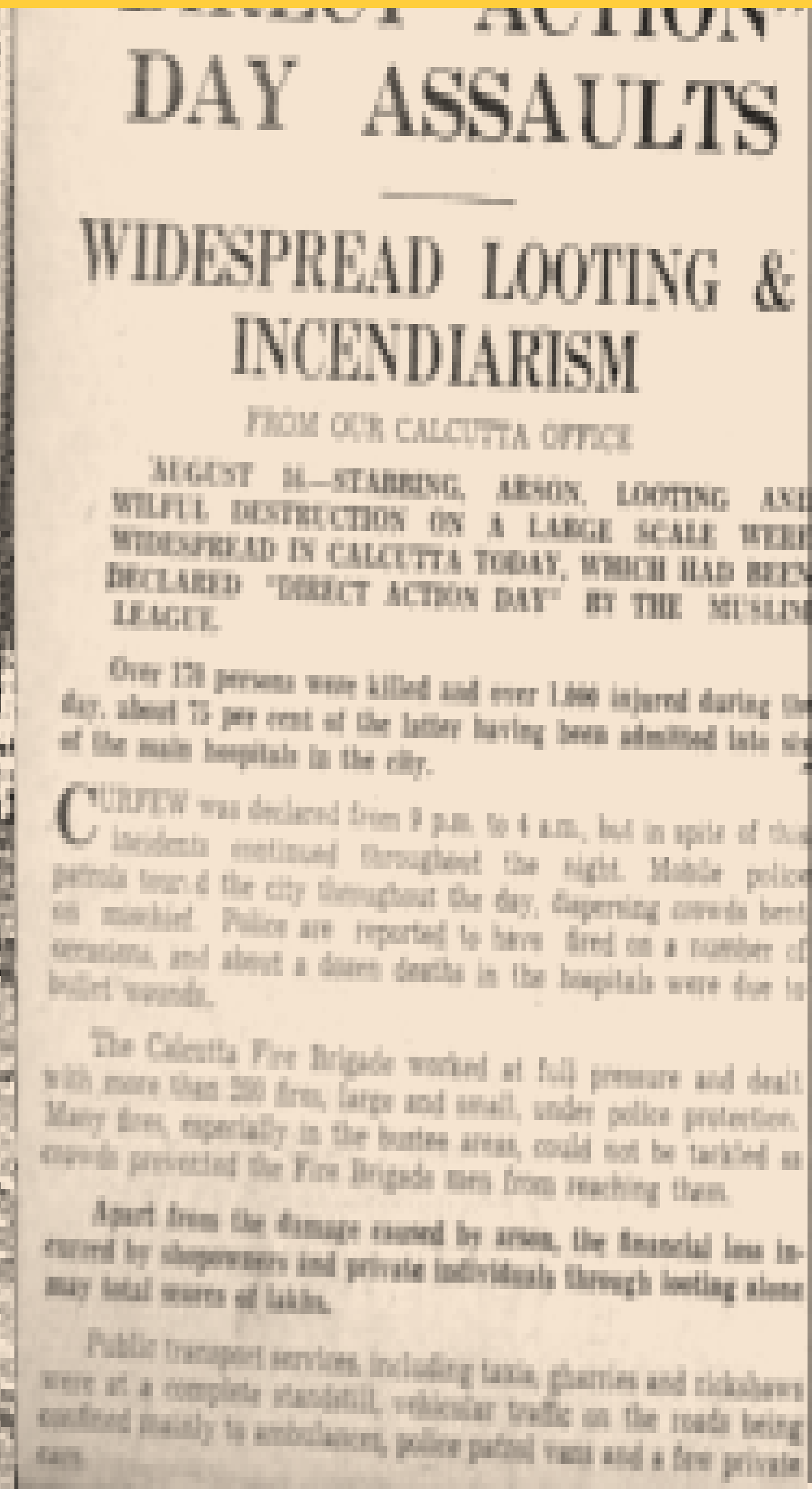

DAY ASSAULTS

WIDESPREAD LOOTING & INCENDIARISM

FROM OUR CALCUTTA OFFICE

AUGUST 16.—STABBING, ARSON, LOOTING AND WILFUL DESTRUCTION ON A LARGE SCALE WERE WIDESPREAD IN CALCUTTA TODAY, WHICH HAD BEEN DECLARED "DIRECT ACTION DAY" BY THE MUSLIM LEAGUE.

Over 170 persons were killed and over 1,000 injured during the day, about 75 per cent of the latter having been admitted into six of the main hospitals in the city.

CURFEW was declared from 9 p.m. to 4 a.m., but in spite of this incidents continued throughout the night. Mobile police patrols toured the city throughout the day, dispersing crowds bent on mischief. Police are reported to have fired on a number of occasions, and about a dozen deaths in the hospitals were due to bullet wounds.

The Calcutta Fire Brigade worked at full pressure and dealt with more than 200 fires, large and small, under police protection. Many fires, especially in the bustee areas, could not be tackled as crowds prevented the Fire Brigade men from reaching them.

Apart from the damage caused by arson, the financial loss incurred by shopowners and private individuals through looting alone may total scores of lakhs.

Public transport services, including taxis, gharries and rickshaws were at a complete standstill, vehicular traffic on the roads being confined mainly to ambulances, police patrol vans and a few private cars.

डायरेक्ट एक्शन डे पर बंगाल में हो रही घटनाओं के दौरान डॉ. श्यामा प्रसाद का नेतृत्व

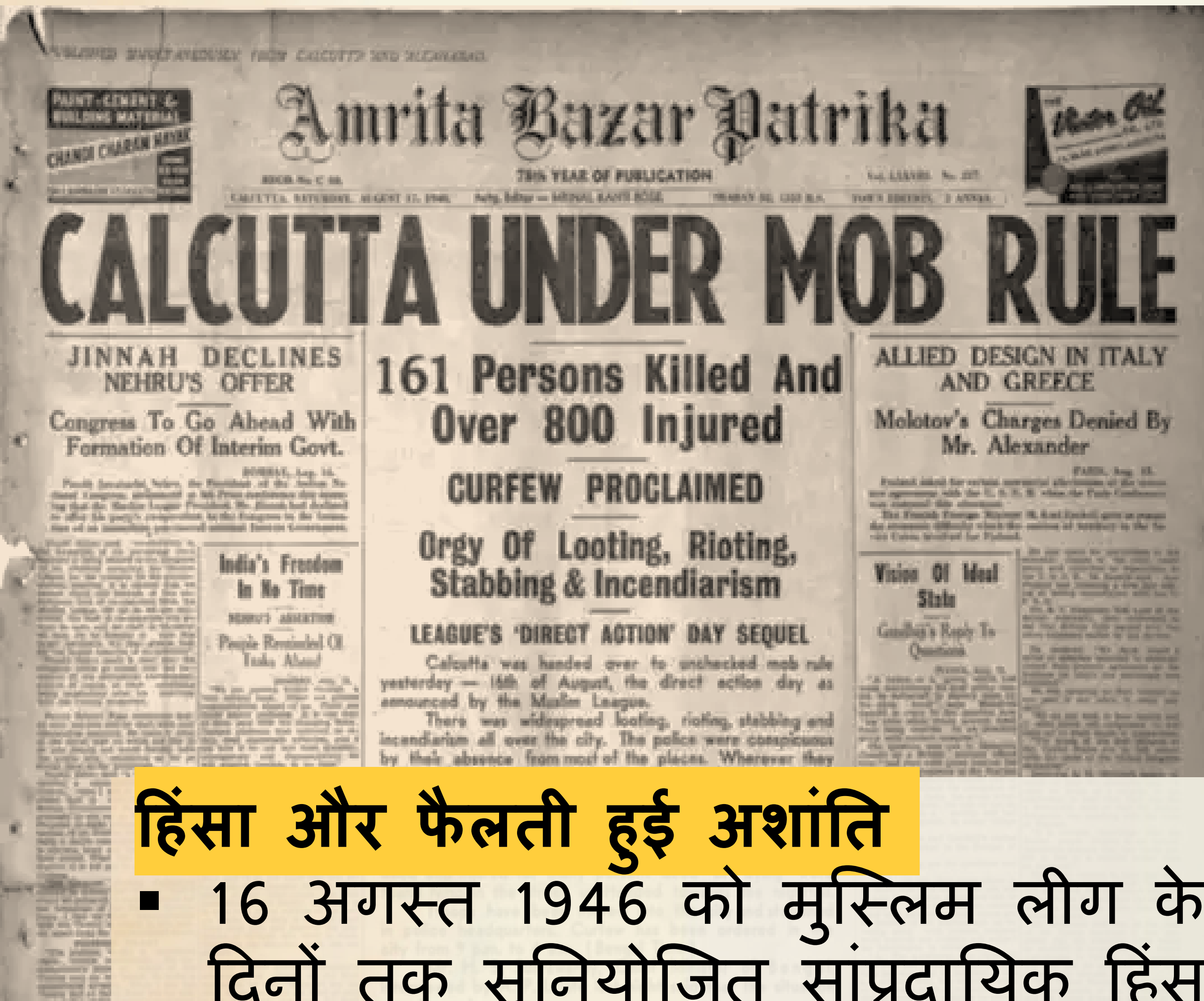
Amrita Bazar Patrika

CALCUTTA UNDER MOB RULE

JINNAH DECLINES NEHRU'S OFFER

Congress To Go Ahead With Formation Of Interim Govt.

161 Persons Killed And Over 800 Injured

CURFEW PROCLAIMED

Orgy Of Looting, Rioting, Stabbing & Incendiarism

LEAGUE'S 'DIRECT ACTION' DAY SEQUEL

Calcutta was handed over to unchecked mob rule yesterday — 16th of August, the direct action day as announced by the Muslim League. There was widespread looting, rioting, stabbing and incendiarism all over the city. The police were conspicuous by their absence from most of the places. Wherever they

ALLIED DESIGN IN ITALY AND GREECE

Molotov's Charges Denied By Mr. Alexander

India's Freedom In No Time

Vision Of Ideal State

Gandhi's Reply To Questions

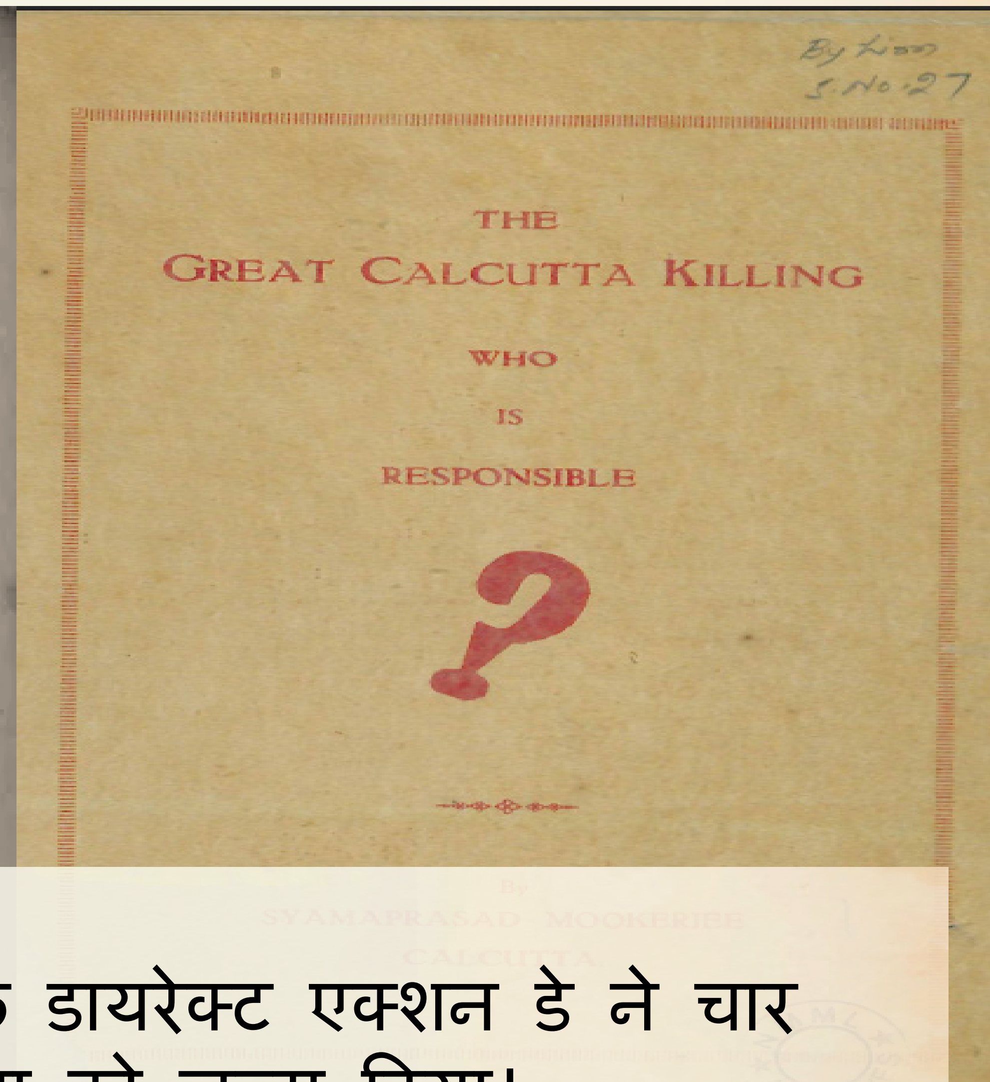

हिंसा और फैलती हुई अशांति

- 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग के डायरेक्ट एक्शन डे ने चार दिनों तक सुनियोजित सांप्रदायिक हिंसा को जन्म दिया।
- एच.एस. सुहरावर्दी के नेतृत्व वाली मुस्लिम लीग सरकार ने इस दौरान सार्वजनिक अवकाश घोषित कर दिया, जिसकी वजह से भीड़ लूटपाट, आगजनी और हत्या कर पाई, जबकि स्टेट मौन रहा। ब्रिटिश अधिकारियों ने इसे "अनियंत्रित बर्बरता" बताया।
- यह आतंक जल्द ही नोआखली में भी फैल गया, जहां नरसंहार, बलात्कार और जबरन धर्मांतरण होने लगे।

डॉ. श्यामा प्रसाद ने राहत प्रयासों का नेतृत्व किया

- सरकार की मिलीभगत और पतन के बावजूद डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कदम पीछे नहीं खींचे।
- उन्होंने कई प्रयास किए:
    - हिंदुस्तान नेशनल गार्ड का गठन किया।
    - बचाव, राहत और सुरक्षा प्रयासों का नेतृत्व किया।
    - दंगा प्रभावित क्षेत्रों का व्यक्तिगत रूप से दौरा किया।
    - नागरिक सुरक्षा को संगठित किया।

बंगाल का विभाजन और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की भूमिका

डॉ. मुखर्जी के प्रयासों से यह सुनिश्चित हुआ कि बंगाल का एक हिस्सा भारत के साथ बना रहे

- उनके प्रयासों की बदौलत पश्चिम बंगाल का निर्माण हुआ और कोलकाता इसकी राजधानी के रूप में भारतीय संघ का अभिन्न अंग बना रहा।
- डॉ. मुखर्जी ने पूरे बंगाल को पाकिस्तान में शामिल करने का विरोध किया और बंगाली हिंदुओं के लिए मातृभूमि के रूप में एक प्रांत के निर्माण की वकालत की।
- बंगाल के विभाजन की योजना के लिए उनकी सशक्त, ठोस और समय पर वकालत ने बड़ी संख्या में लोगों को उनके पक्ष में खड़ा किया।

जनमत जुटाया और बुद्धिजीवियों का समर्थन किया

- डॉ. मुखर्जी ने वायसराय माउंटबेटन से मुलाकात की और आर. सी. मजूमदार, जदुनाथ सरकार, राधाकुमुद मुखर्जी, मेघनाद साहा, पी.आर. ठाकुर और जी. डी. बिड़ला जैसे प्रमुख बुद्धिजीवियों सहित बंगाली समाज के विभिन्न वर्गों से मिलकर पश्चिम बंगाल के निर्माण के पक्ष में जनमत जुटाया।
- पश्चिम बंगाल का निर्माण निस्संदेह श्यामा प्रसाद मुखर्जी की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक था।

1946: संविधान सभा में एक देशभक्त आवाज़

बंगाल से संविधान सभा के लिए चुने गए

- बंगाल में हुए विनाश और कलकत्ता हत्याकांड के बाद, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी दिल्ली आए, जहाँ वे एक राष्ट्रीय नेता बनने की ओर अग्रसर हुए।
- बंगाल से संविधान सभा के लिए चुने जाने के बाद वे पूर्वी बंगाल के हिंदुओं की एक प्रमुख आवाज़ और संवैधानिक राष्ट्रवाद के रक्षक बन गए।

बंगाल से संविधान सभा के लिए चुने गए

- उन्होंने शुरू में विभाजन का विरोध किया, एक मजबूत और संप्रभु केंद्र के लिए तर्क दिया और संघीय कमज़ोरियों के खिलाफ़ चेतावनी दी।
- उन्होंने धर्म के आधार पर विशेष अधिकारों को अस्वीकार कर दिया, समान नागरिकता का समर्थन किया और अलग-अलग निर्वाचन क्षेत्रों का विरोध किया।
- नागरिक स्वतंत्रता, शिक्षा सुधार और समान नागरिक संहिता के एक दृढ़ समर्थक, वे न्याय, समानता और सांस्कृतिक अखंडता में निहित एक अखंड भारत के लिए हमेशा खड़े रहे ।

भारत के प्रथम उद्योग मंत्री

औद्योगिक दृष्टिकोण के वास्तुकार

- 15 अगस्त 1947 को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी पहले मंत्रिमंडल में भारत के पहले उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री बने।
- उन्होंने स्वतंत्र भारत में औद्योगिक आत्मनिर्भरता, शरणार्थी पुनर्वास और आर्थिक स्थिरता पर ध्यान केंद्रित किया।

उद्योगों को प्राथमिकता देने वाली औद्योगिक नीति

- 6 अप्रैल 1948 को उन्होंने संतुलित मिश्रित अर्थव्यवस्था मॉडल को परिभाषित करते हुए भारत की पहली औद्योगिक नीति पेश की।
- डॉ. मुखर्जी के कार्यकाल के दौरान कई ऐतिहासिक सार्वजनिक उपक्रम शुरू किए गए।

चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स

सिंदरी फर्टिलाइजर कॉर्पोरेशन लिमिटेड.

हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड

15

New Delhi,
6th April 1950.

My dear Panditji,

I hereby tender my resignation of my office as Minister. I hope you will kindly relieve me as early as possible.

The reason for my resignation, as I have communicated to you, arises out of the policy pursued regarding Indo-Pakistan relationship, specially relating to Bengal. The Agreement which, I suppose, will be finalised today does not touch the basic problem and is not likely to offer any solution. I can under no circumstances be a party to it. Apart from the fact that it will bring little solace to the sufferers, it has certain features which are bound to give rise to fresh communal and political problems in India, the consequences of which we cannot foresee today. In my humble opinion the policy you are following will fail. Time alone can prove this.

It has been a privilege to work in the first Cabinet of Free India for two and a half years and may I thank you for the opportunity you gave me to do so?

Yours sincerely,
Sd/- Syama Prasad Mookerjee.

Hon'ble Pandit Jawaharlal Nehru,
Prime Minister,
New Delhi.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

8 अप्रैल 1950 को भारत और पाकिस्तान ने नेहरू-लियाकत समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें दोनों देशों में अल्पसंख्यकों के लिए समान अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता और सुरक्षा का वचन दिया गया।

तत्कालीन उद्योग और आपूर्ति मंत्री डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने पूर्वी बंगाल से आए हिंदू शरणार्थियों की तत्काल दुर्दशा को संबोधित करने में इस समझौते को अपर्याप्त पाया और इस्तीफा दे दिया।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का त्यागपत्र

कोलकाता में एक सभा को संबोधित करते हुए

डॉ. मुखर्जी की संसदीय बहसें

17

Statement by Dr. S.P. Mookerjee on his resignation as Minister of Industry and Supply*

Sir, in accordance with parliamentary convention I rise to make a statement explaining the reasons which have led to my resignation from the Cabinet. Let me assure the House that I have not taken the step on the spur of the moment but after deep and deliberate thought. It has been a matter of regret to me that I have not been able to reconsider my decision, although pressed to do so by many for whom I entertain the deepest personal regard. For over 2½ years it has been my proud privilege to work as a Minister of the first National Cabinet of Free India and I have not spared myself in the discharge of the duties that fell upon me. To me the experience has been of great value and it has been my privilege to work in an atmosphere of friendliness and co-operation during one of the most critical periods in the history of our country. To all sections of the House I convey my gratitude for the confidence reposed in me and to Pandit Jawaharlal Nehru and Sardar Vallabhbhai Patel I specially tender my grateful thanks for the opportunity they gave me to serve the country under their leadership. There is nothing of a personal character which has prompted me to resign and I do hope that those with whom I have disagreed will appreciate the depth of my convictions just as I have unhesitatingly appreciated their own. My differences are fundamental and it is not fair or honourable for me to continue as a member of the Government whose policy I

*Parliamentary Debates, 19 April, 1950

cannot approve of. In all fairness to the Prime Minister I should state that when I communicated my decision to him on 1st April, even before the Prime Minister of Pakistan arrived in India, he readily appreciated my standpoint, acknowledged our differences and agreed to release me from the burden of my office. Any withdrawal at a subsequent stage would not have been fair to him or to me.

I have never felt happy about our attitude towards Pakistan. It has been weak, halting and inconsistent. Our goodness or inaction has been interpreted as weakness by Pakistan. It has made Pakistan more and more intransigent and has made us suffer all the greater and even lowered us in the estimation of our own people. On every important occasion we have remained on the defensive and failed to expose or counteract the designs of Pakistan aimed at us. I am not, however, dealing today with general Indo-Pakistan relationship, for the circumstances that have led to my resignation are primarily concerned with the treatment of minorities in Pakistan, specially in East Bengal. Let me say at once the Bengal problem is not a provincial one. It raises issues of an all-India character and on its proper solution will depend the peace and prosperity, both economic and political, of the entire nation. There is an important difference in the approach to the problem of minorities in India and Pakistan. The vast majority of Muslims in India wanted the partition of the country on a communal basis, although I gladly recognise there has been a small section of patriotic Muslims who consistently have identified themselves with national interests and suffered for it. The Hindus on the other hand were almost to a man definitely opposed to partition. When the partition of India became inevitable, I played a very large part in creating public opinion in favour of the partition of Bengal, for I felt that if that was not done, the whole of Bengal and also perhaps Assam would fall into Pakistan. At that time little knowing that I would join the first Central Cabinet, I along with others, gave assurances to the Hindus of East Bengal, stating that if they suffered at the hands of the future Pakistan Government, if they were denied elementary rights of citizen-

ship, if their lives and honour were jeopardised or attacked, Free India would not remain an idle spectator and their just cause would be boldly taken up by the Government and people of India. During the last 2½ years their sufferings have been of a sufficiently tragic character. Today I have no hesitation in acknowledging that in spite of all efforts on my part, I have not been able to redeem my pledge and on this ground alone — if on no other — I have no moral right to be associated with Government any longer. Recent happenings in East Bengal have however overshadowed all their past woes and humiliation. Let us not forget that the Hindus of East Bengal are entitled to the protection of India, not on humanitarian considerations alone, but by virtue of their sufferings and sacrifices, made cheerfully for generations, not for advancing their own parochial interests, but for laying the foundations of India's political freedom and intellectual progress. It is the united voice of the leaders that are dead and of the youth that smilingly walked upto the gallows for India's cause that calls for justice and fairplay at the hands of Free India of today.

The recent Agreement, to my mind, offers no solution to the basic problem, The evil is far deeper and no patchwork can lead to peace. The establishment of a homogeneous Islamic State is Pakistan's creed and a planned extermination of Hindus and Sikhs and expropriation of their properties constitute its settled policy. As a result of this policy, life for the minorities in Pakistan has become "nasty, brutish and short" Let us not be forgetful of the lessons of history. We will do so at our own peril. I am not talking of by-gone times; but if anyone analyses the course of events in Pakistan since its creation, it will be manifest that there is no honourable place for Hindus within that State. The problem is not communal. It is essentially political. The Agreement unfortunately tries to ignore the implications of an Islamic State. But anyone, who refers carefully to the Objectives Resolution passed by the Constituent Assembly of Pakistan and to the speech of its Prime Minister, will find that while talking in one place of protection of minority rights, the Resolution in another place emphatically declares "that the

principles of democracy, freedom, equality, tolerance and special justice as enunciated by Islam shall be fully observed". The Prime Minister of Pakistan while moving the Resolution thus spoke:

> "You would also notice that the State is not to play the part of a neutral observer wherein the Muslims may be merely free to profess and practice their religion, because such an attitude on the part of the State would be the very negation of the ideals which prompted the demand of Pakistan and it is these ideals which should be the cornerstone of the State which we want to build. The State will create such conditions as are conducive to the building up of a truly Islamic Society which means that the State will have to play a positive part in this effort. You would remember that the Quaid-e-Azam and other leaders of the Muslim League always made unequivocal declarations that the Muslim demand for Pakistan was based upon the fact that the Muslims had their own way of life and a code of conduct. Indeed, Islam lays down specific directions for social behaviour and seeks to guide society in its attitude towards the problems which confront it day to day. Islam is not just a matter of private beliefs and conduct."

In such a Society, let me ask in all seriousness, can any Hindu expect to live with any sense of security in respect of his cultural, religious, economic and political rights Indeed our Prime Minister analysed the basic difference between India and Pakistan only a few weeks ago on the floor of the House and his words will bear repetition:

> "The people of Pakistan are of the same stock as we are and have the same virtues and failings. But the basic difficulty of the situation is that the policy of a religious and communal State followed by the Pakistan Government inevitably produces a sense of lack of full citizenship and a continuous insecurity among those who do not belong to the majority community".

It is not the ideology preached by Pakistan that is the only disturbing factor. Its performances have been in full accord with its ideology and the minorities have had bitter experiences times without number of the true character and functioning of an Islamic State. The Agreement has totally failed to deal with this basic problem.

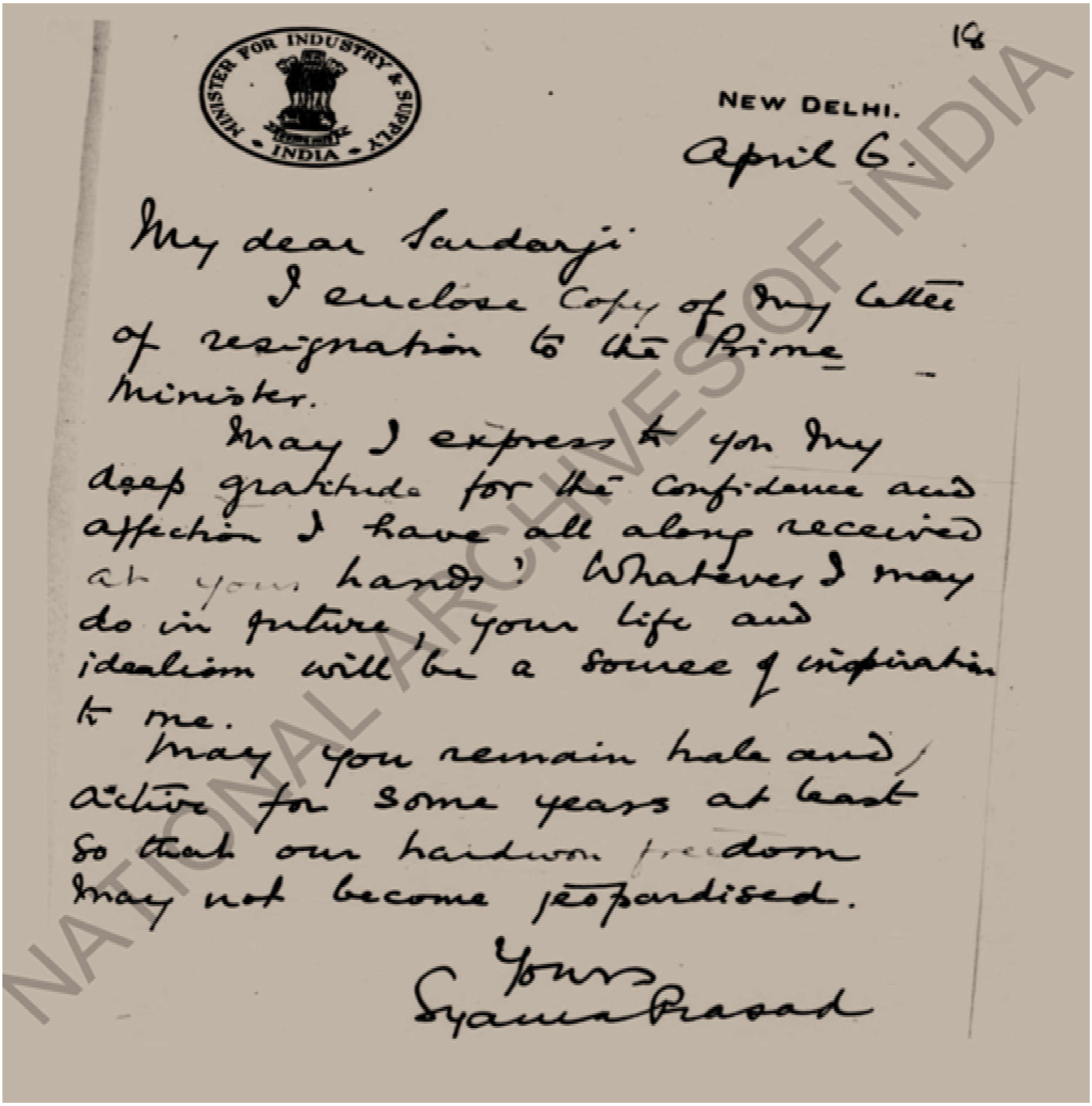

MINISTER FOR INDUSTRY & SUPPLY
INDIA

16

NEW DELHI.

April 6.

My dear Sardarji

I enclose copy of my letter of resignation to the Prime Minister.

May I express to you my deep gratitude for the confidence and affection I have all along received at your hands! Whatever I may do in future, your life and idealism will be a source of inspiration to me.

May you remain hale and active for some years at least so that our hardwon freedom may not become jeopardised.

Yours
Syama Prasad

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का सरदार पटेल को पत्र

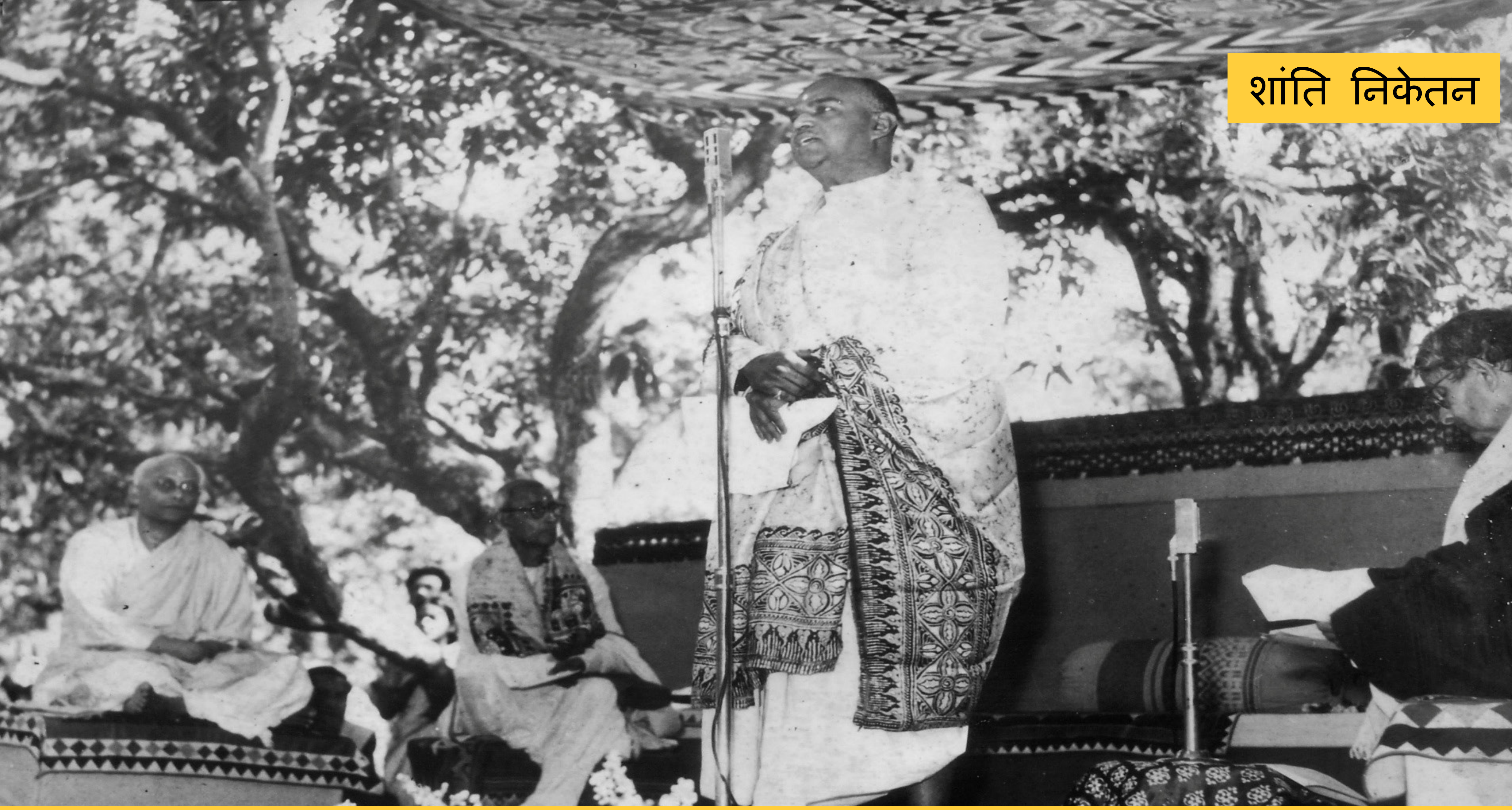

भारतीय चेतना की राष्ट्रीय जागृति की दिशा में उनके प्रयास जारी रहे...

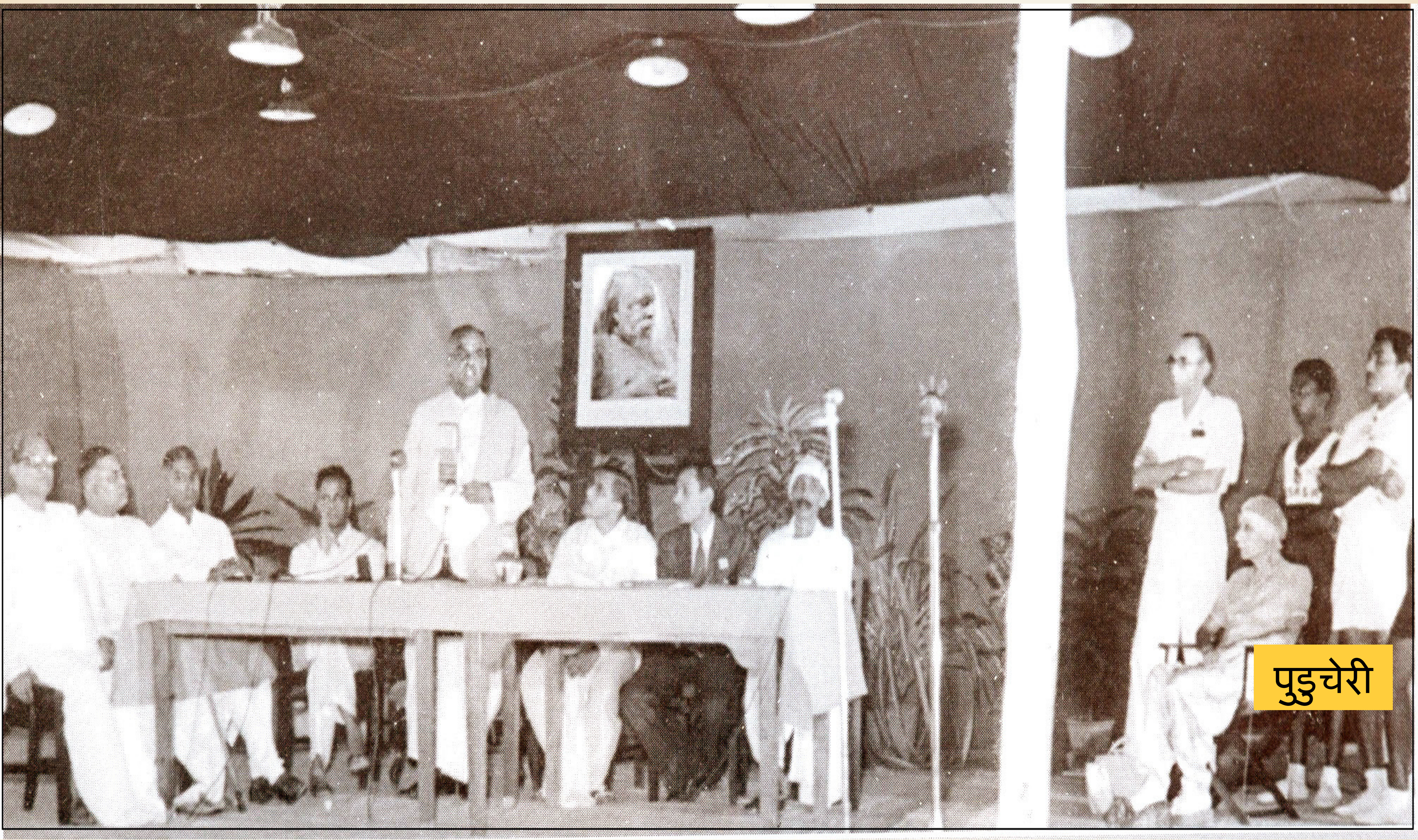

भारतीय जनसंघ और भारत के पहले विपक्षी ब्लॉक की स्थापना की

Object

The object of the Bharatiya Jana Sangh is the rebuilding of Bharat on the basis of Bharatiya '*Sanskriti*' and '*Maryada*' and as a political, social, and economic democracy granting equality of opportunity and liberty of individual so as to make her a prosperous, powerful and united nation progressive, modern and enlightened, able to withstand the aggressive designs of others and to pull her weight in the council of nations for the establishment of the world peace.

नई राजनीतिक पार्टी का गठन

- दिल्ली समझौते पर इस्तीफा देने के बाद, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 21 अक्टूबर 1951 को भारतीय जनसंघ की स्थापना की।
- वे इसके पहले अध्यक्ष बने और इसकी पहचान के तौर पर 'दीपक' चिन्ह अपनाया।
- 1952 के चुनावों में, जनसंघ ने 3 लोकसभा सीटें जीतीं, जिनमें मुखर्जी की अपनी सीट भी शामिल थी।

मजबूत विपक्ष का निर्माण

- इसके बाद उन्होंने कांग्रेस विरोधी ताकतों को एकजुट करके नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी (NDP) का गठन किया - जो भारत का पहला मजबूत एवं संगठित विपक्षी ब्लॉक था।
- इस मॉडल ने आज के नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस (NDA) जैसे गठबंधनों की नींव रखी।

एकात्म मानववाद की अवधारणा

एकात्म मानववाद मानव विकास का एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक आयामों को समग्र रूप से एक करता है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की मानव की अवधारणा केवल उसकी आर्थिक उपयोगिता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा से युक्त एक समग्र इकाई के रूप में देखा जाता है।

इस दृष्टिकोण का उद्देश्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ, भौतिक समृद्धि का आध्यात्मिक विकास के साथ, तथा राष्ट्रीय उन्नति का सांस्कृतिक अखंडता के साथ सामंजस्य स्थापित करना था।

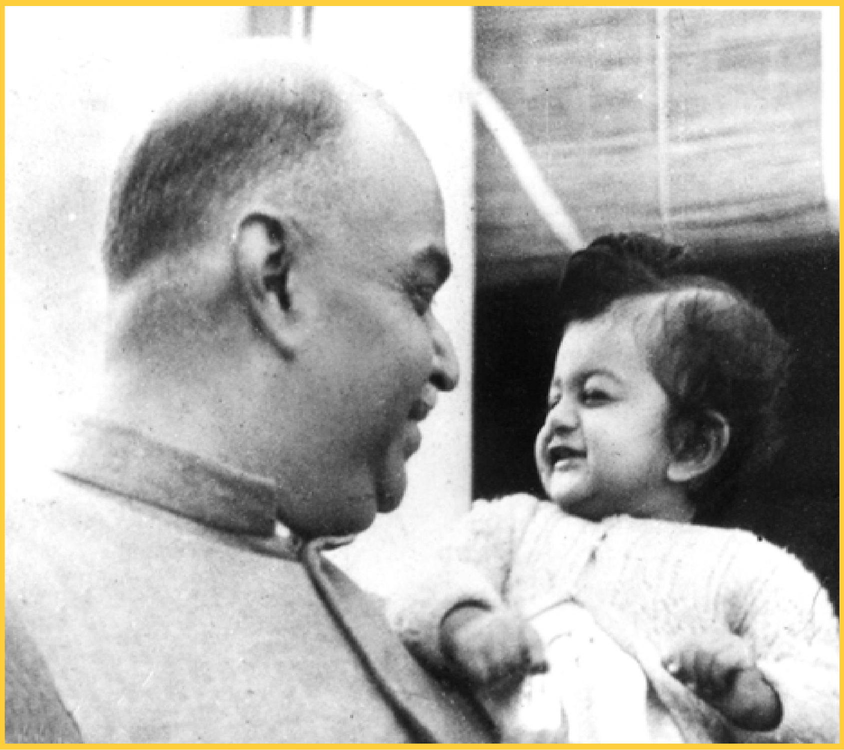

डॉ. श्यामा प्रसाद के नज़रिये और भाषणों में एकात्म मानववाद के मूल सिद्धांतों पर आधारित विश्वदृष्टि झलकती थी।

उन्होंने लगातार इस बात पर जोर दिया कि भारत की प्रगति को पश्चिम की अंधी नकल नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसे अपनी सांस्कृतिक और नैतिक नींव से ताकत हासिल करनी चाहिए।

1951 में जब डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की, तो दीनदयाल जी इसकी उत्तर प्रदेश शाखा के पहले महासचिव बने। उन्हें अखिल भारतीय महासचिव भी चुना गया।

अंत्योदय: पिरामिड के सबसे निचले स्तर पर मौजूद लोगों तक पहुंचना

"राजनीतिक और सामाजिक न्याय... का अर्थ है सभी के लिए अवसर की समानता, जाति या पंथ से परे, आत्म-पूर्ति के लिए वास्तविक स्वतंत्रता।"

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी

आगरा विश्वविद्यालय, 1940

समावेशन और पहुँच पर विशेष ध्यान

- समाज को लेकर महात्मा गांधी और बाद में दीनदयाल उपाध्याय जैसे नेताओं का जो नज़रिया था, उसमें अंत्योदय का दर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण था।
- हालांकि डॉ. मुखर्जी ने सीधे तौर पर इस शब्द का इस्तेमाल नहीं किया, लेकिन उनके राजनीतिक और शैक्षणिक कार्यों ने न्याय, समानता और समावेशन की आवश्यकता पर जोर दिया, खासकर हाशिए पर मौजूद समुदायों के लिए।
- सभी नागरिकों के लिए अवसर और विकास तक समान पहुँच सुनिश्चित करने में उनका विश्वास अंत्योदय के मूल सार को दर्शाता है।

डॉ. मुखर्जी और धम्म से जुड़ी कूटनीति

महाबोधि सोसाइटी के अध्यक्ष

- 1942 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाबोधि सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष बने और उन्होंने भारत की सभ्यतागत विरासत को आगे बढ़ाया।

कलकत्ता मैदान में बौद्ध अवशेष प्राप्त किए

- 1949 में, उन्होंने कलकत्ता मैदान में सारिपुत्र और मौद्गल्यायन के अवशेष प्राप्त किए, जिन्हें ब्रिटिश संग्रहालय से लेकर प्रधानमंत्री नेहरू ने सौंपा था।

बौद्ध अवशेषों को दक्षिण-पूर्व एशिया ले गए

- मार्च 1952 में वे अवशेषों को म्यांमार, कंबोडिया, थाईलैंड और वियतनाम ले गए, जिससे दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ भारत के आध्यात्मिक संबंधों को बढ़ावा मिला।

सांची में अवशेषों को पुनर्स्थापित किया

- 1952 के अंत में वापस लौटने पर उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन के दौरान सांची में उन्हें फिर से स्थापित किया, जिससे वैश्विक मंच पर बुद्ध की विरासत का भारत द्वारा संरक्षण बहाल हुआ।

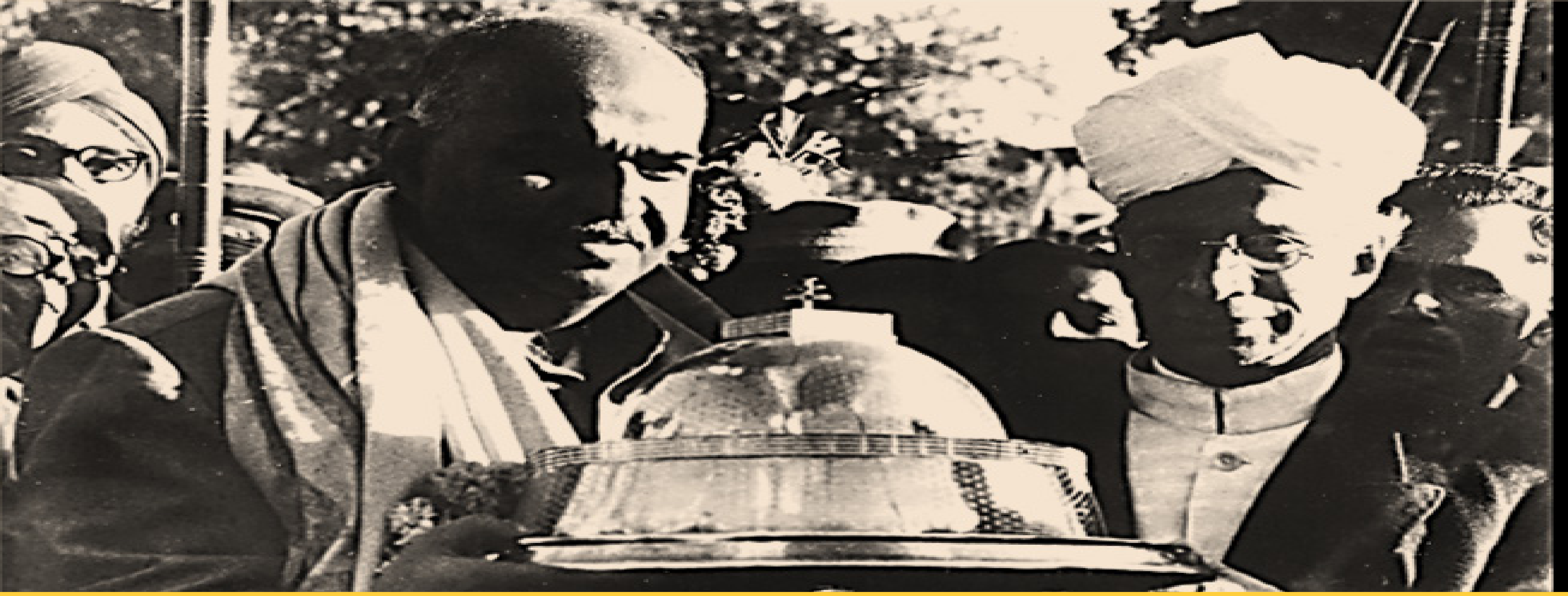

राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन के साथ डॉ. मुखर्जी, कलकत्ता स्थित महाबोधि सोसाइटी में बौद्ध अवशेषों के साथ।

उन्होंने बौद्ध अवशेषों को पूरे दक्षिण पूर्व एशिया तक पहुंचाया।

कश्मीर और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की भूमिका (1)

जम्मू-कश्मीर पर केंद्रित ध्यान

- अपने जीवन के अंतिम पंद्रह महीनों के दौरान डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के प्रयास इस बात पर केंद्रित रहे कि भारत के नागरिकों को जो संवैधानिक अधिकार मिले हैं, उन तक जम्मू और कश्मीर के लोगों की भी पूरी पहुंच सुनिश्चित हो।

भारत के संविधान और ध्वज पर ज़ोर

- डॉ. मुखर्जी का मानना था कि संविधान, राष्ट्रीय ध्वज और सरकार का निर्वाचित मुखिया भारत के लोकतांत्रिक विचार का केंद्र हैं और उन्होंने 'एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेंगे' का नारा दिया।

शांतिपूर्ण सत्याग्रह का समर्थन

- जम्मू-कश्मीर सरकार ने सत्याग्रहियों का भीषण दमन किया और आंदोलन के अधिकांश नेताओं को जेल में डाल दिया।
- डॉ. मुखर्जी प्रेम नाथ डोगरा के नेतृत्व वाली जम्मू-कश्मीर प्रजा परिषद के साथ जुड़े। इस परिषद ने जम्मू-कश्मीर राज्य के भारत में पूर्ण एकीकरण की अपनी माँग के लिए शांतिपूर्ण सत्याग्रह शुरू किया था।

कश्मीर और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की भूमिका (2)

जम्मू और कश्मीर के नेताओं से मुलाकात की

- सच्ची लोकतांत्रिक भावना से डॉ. मुखर्जी ने बातचीत का आह्वान किया और अगस्त 1952 में शेख अब्दुल्ला और युवराज कर्ण सिंह से मुलाकात कर समस्या का सौहार्दपूर्ण समाधान निकाला।

निरंतर संवाद

- जनवरी और फरवरी 1953 के दौरान उन्होंने इस मुद्दे का सार्थक समाधान सुनिश्चित करने के लिए शेख अब्दुल्ला और जवाहरलाल नेहरू को कई पत्र लिखे।

संसद में वक्तव्य

- 16 मार्च 1953 को डॉ. मुखर्जी ने संसद में एक वक्तव्य में जम्मू-कश्मीर मुद्दे को ऐसे तरीके से सुलझाने की अपील की जो न केवल जम्मू-कश्मीर के लोगों के लिए बल्कि भारत के लोगों के लिए भी उचित और न्यायसंगत हो।

Now, take the movement which is going on. This is not the occasion when I am going to refer to the details. In fact, I was looking forward to a special debate on that question which the Prime Minister very kindly offered a few days ago when we were absent from this House. It would have been better if that debate could have taken place when we were present here, so that we could have spoken to each other, not in private but on the floor of this House, and understood each other's viewpoints. But the crux of the problem on the basis of which the movement is going on is the finality of the accession of the Jammu and Kashmir State to India. And that question has got to be settled in a manner which is fair and just not only to the people of Jammu and Kashmir but also to the people of India.

कश्मीर और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की भूमिका (3)

जम्मू-कश्मीर जाने की योजना बनाई

- डॉ. मुखर्जी ने मई 1953 में व्यक्तिगत रूप से स्थिति का सर्वेक्षण करने के लिए जम्मू-कश्मीर जाने का फैसला किया।

अटलजी और अन्य लोगों के साथ दिल्ली से रवाना हुए

- 8 मई 1953 को, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी दिल्ली से जम्मू के लिए रवाना हुए, उनके साथ अटल बिहारी वाजपेयी जी और अन्य लोग भी थे, जो अनुच्छेद 370 का विरोध करने और एक राष्ट्र, एक संविधान को बनाए रखने के मिशन पर निकले थे।

शेख अब्दुल्ला को भेजा गया तार

- उन्होंने शेख अब्दुल्ला और प्रधानमंत्री को तार भेजा: *"जम्मू जाने का मेरा उद्देश्य केवल यह जानना है कि वहां वास्तव में क्या हुआ था और वर्तमान स्थिति क्या है। मेरा प्रयास यह पता लगाना होगा कि जम्मू के लोगों की मंशा क्या है, और यह कि क्या आंदोलन को शांतिपूर्ण और सम्मानजनक अंत तक ले जाने की कोई संभावना है, जो न केवल राज्य के लोगों के लिए बल्कि पूरे भारत के लिए भी उचित और न्यायसंगत होगा।"*

रास्ते में बड़ी सभाओं को संबोधित किया

- उन्होंने शाहबाद, करनाल, पानीपत, फगवाड़ा, पठानकोट से यात्रा की और कई बड़ी सभाओं को संबोधित करते हुए अपनी यात्रा के उद्देश्य को लोगों तक पहुँचाया।

कश्मीर और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की भूमिका (4)

रोके जाने की आशंका

- उस समय बिना परमिट के जम्मू और कश्मीर में प्रवेश करना अवैध था, इसलिए डॉ. श्यामा प्रसाद का अनुमान था कि उन्हें रोक दिया जाएगा।

जम्मू और कश्मीर में आगे बढ़ने की अनुमति दी गई

- हालांकि उनकी उम्मीदों के विपरीत, पठानकोट में गुरदासपुर के डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें सूचित किया कि उन्हें जम्मू और कश्मीर में आगे बढ़ने की अनुमति देने का निर्देश दिया गया है।

अनुमति दी गई, लेकिन बाद में गिरफ्तार कर लिया गया

- पहले उन्हें बिना परमिट के जम्मू और कश्मीर में प्रवेश करने की अनुमति दी गई थी, लेकिन बाद में 11 मई 1953 को पंजाब और जम्मू और कश्मीर के बीच लखनपुर (माधोपुर चेकपोस्ट) पर सार्वजनिक सुरक्षा अधिनियम के तहत बिना परमिट के जम्मू और कश्मीर में प्रवेश करने के लिए उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

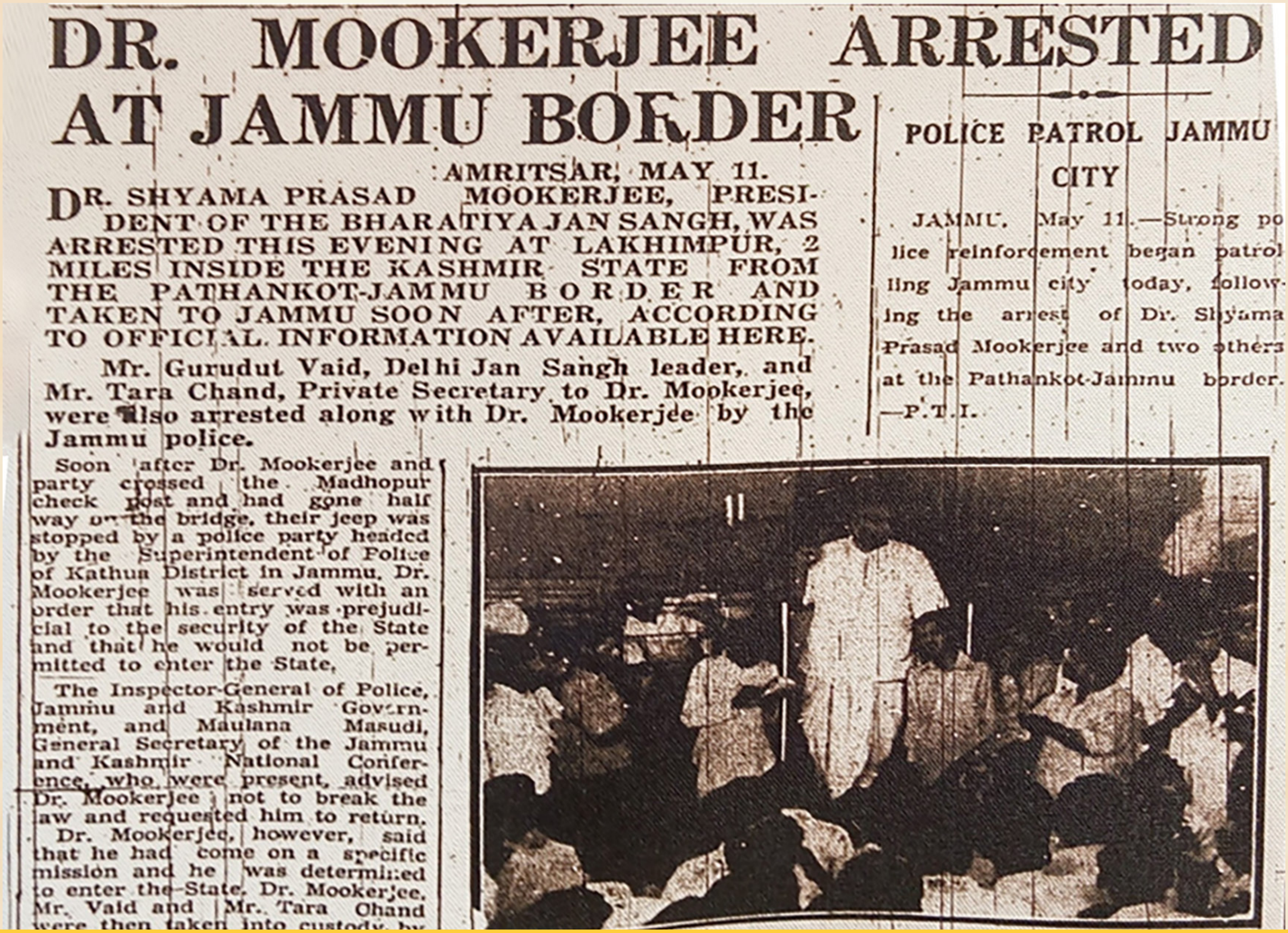

DR. MOOKERJEE ARRESTED AT JAMMU BORDER

AMRITSAR, MAY 11.

DR. SHYAMA PRASAD MOOKERJEE, PRESIDENT OF THE BHARATIYA JAN SANGH, WAS ARRESTED THIS EVENING AT LAKHIMPUR, 2 MILES INSIDE THE KASHMIR STATE FROM THE PATHANKOT-JAMMU BORDER AND TAKEN TO JAMMU SOON AFTER, ACCORDING TO OFFICIAL INFORMATION AVAILABLE HERE.

Mr. Gurudut Vaid, Delhi Jan Sangh leader, and Mr. Tara Chand, Private Secretary to Dr. Mookerjee, were also arrested along with Dr. Mookerjee by the Jammu police.

Soon after Dr. Mookerjee and party crossed the Madhopur check post and had gone half way on the bridge, their jeep was stopped by a police party headed by the Superintendent of Police of Kathua District in Jammu. Dr. Mookerjee was served with an order that his entry was prejudicial to the security of the State and that he would not be permitted to enter the State.

The Inspector-General of Police, Jammu and Kashmir Government, and Maulana Masudi, General Secretary of the Jammu and Kashmir National Conference, who were present, advised Dr. Mookerjee not to break the law and requested him to return.

Dr. Mookerjee, however, said that he had come on a specific mission and he was determined to enter the State. Dr. Mookerjee, Mr. Vaid and Mr. Tara Chand were then taken into custody by

POLICE PATROL JAMMU CITY

JAMMU, May 11.—Strong police reinforcement began patrolling Jammu city today, following the arrest of Dr. Shyama Prasad Mookerjee and two others at the Pathankot-Jammu border.—P.T.I.

डॉ. मुखर्जी को श्रीनगर में एक छोटी सी कुटिया में हिरासत में रखा गया था। यहीं पर वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और उन्हें ढंग की चिकित्सकीय देखभाल नहीं मिली। इसके बाद उनकी हालत तेजी से बिगड़ती गई और अंततः 23 जून 1953 को उनकी मृत्यु हो गई।

प्रेस विज्ञप्ति से एक उद्धरण
(जम्मू-कश्मीर सरकार द्वारा जारी)

At 9 P.M. his general condition was fairly good except for low blood-pressure and rapid pulse.

At 11 P.M. oxygen was given to allay restlessness which started at that time. His blood-pressure fell to 100/80. Glucose with aminophylline was given intravenously.

At 1 A.M. he got pain in the heart area and became restless. Pulse was feeble and blood-pressure 90/70. Oxygen was continued. To relieve pain, Pethidine, one cc, was given.

At 2.30 A.M. his condition was as above. Respiration and pulse became imperceptible. Coromine and Aminophylline given intravenously.

3 A.M. condition as above. Pulse was slightly perceptible. Oxygen was continued with intravenous coromine given again.

At 3.20 A.M. pulse was again imperceptible; Respiration feeble and irregular. Oxygen was continued.

3.40 A.M. respiration and pulse stopped."

During his detention, Dr. Mookerjee had been given all amenities and medical care. At 2.30 P.M. yesterday he informed his family and friends telegraphically that his condition was satisfactory. He sent the following telegram to his brother, Justice Mookerjee, in Calcutta:

"Sudden dry pleurisy three days ago. Better today. Fever pain much less. Removed hospital. Satisfactory medical arrangements made. No anxiety. Specially tell mother."

The body of Dr. Mookerjee has been flown to Calcutta. Shri Ved Guru Dutt and Shri Tek Chand, who were in detention and were staying along with Dr. Mookerjee, have been released and they are accompanying the body. Pt. Prem Nath Dogra who had been brought to Srinagar earlier and was also staying with Dr. Mookerjee in the same bungalow has also been released and is accompanying the party.

The Prime Minister, Sheikh Mohammad Abdullah, and other members of the Cabinet were present at the airport when the body was brought in by an ambulance.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

एक ऐसी मौत जिसने देश की अंतरात्मा को झकझोर दिया

कलकत्ता में दाह संस्कार

शोक में डूबा राष्ट्र,
जांच की बढ़ती मांग

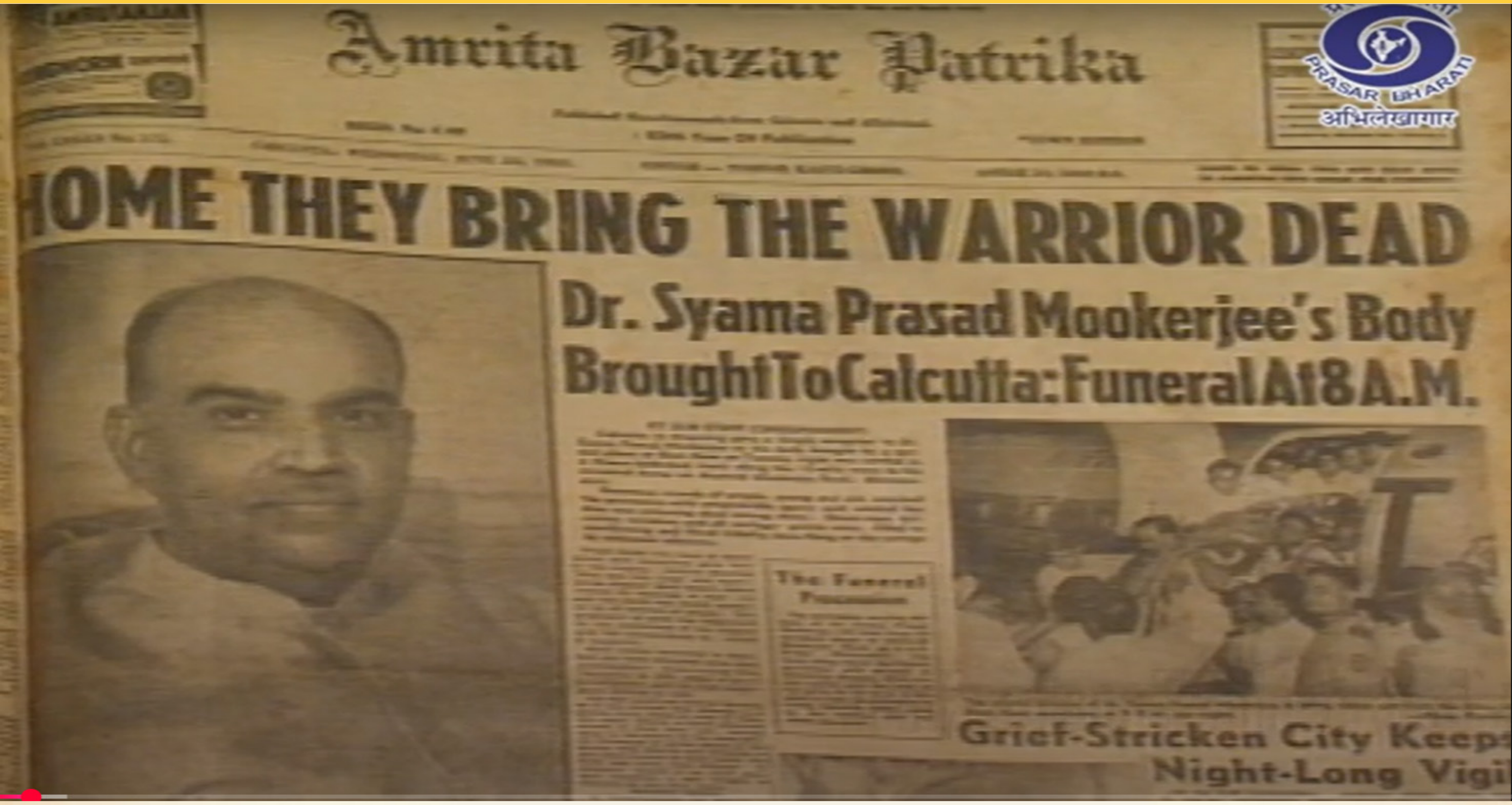

Amrita Bazar Patrika

HOME THEY BRING THE WARRIOR DEAD

Dr. Syama Prasad Mookerjee's Body Brought To Calcutta: Funeral At 8 A.M.

The Funeral Procession

Grief-Stricken City Keeps Night-Long Vigil

MINISTRY OF STATES
New Delhi
26 JUN 1953

D.3578-K/53

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

X L JAMMU MKT 24
HOME MINISTER ND

DR MUKERJEES SAD DEMISE IN SHROUDED CIRCUSMATNCES IN SRINAGAR JAIL HAS CAUSED GREAT SHOCK TO THE PEOPLE AAA SOME FOUL PLAY IN THE MYSTERIOUS DEATH IS APPREHENDED AAA RESENTMENT IS RUNNING HIGH THROUGHOUT THE STATE AAA IMDTE ENQUIRY IN THE MATTER DEMANDED OTHERWISE SITUATION SERIOUS AAA.

DURGADASS VARMA GENERAL SECRETARY ALL JAMMU AND KASHMIR PRAJA PERISHAD.

ACS, 1515

This form must accompany any enquiry respecting this telegram.

D.3655-K/53

SECRET/IMMEDIATE.

INTELLIGENCE BUREAU.
(Ministry of Home Affairs)

It has since been ascertained that Prem Nath Dogra, Guru Dutt Vaid, and Tek Chand were all released today from Srinagar, and that they too left at about 10.40 a.m. in the I.A.F. plane carrying the body of Dr. Mukherji. This plane was scheduled to land at Adampur in Jullundur district, from where the journey to Calcutta would be continued in a civil aircraft of the Indian National Airways. Another passenger in this plane was U.M. Trivedi, M.P., who was allowed to visit Srinagar some time ago for consultations with Dr.S.P. Mukherji.

(P.V. BHASKARAN)
Deputy Director
23.6.53

M.H.A. - (Mr. Pai)
Mini of States - (Mr. Viswanathan)

DIB u.o. No. 25105 dated 23 JUN 1953

D.494-VO/53.
to
D.498-VO/53.

Five petitions placed below ~~are~~ from the ~~presidents~~ of condolence meetings, held in different parts of the country in the memory of Dr. Mookerjee, relate to the condolence messages and ~~state~~ request that an enquiry Committee consisting of impartial persons ~~should~~ be set up to bring the true cause of Dr. Mookerjee's death into light. These may be transferred to K Section for disposal.

D.3785-K/53 (1)
D.3786-K/53 (2)
D.3787-K/53 (3)
D.3788-K/53 (4)
D.3789-K/53 (5)

Refc. above. As the facts relating to Dr. Mookerjee's death have come out in the Newspapers, no action need perhaps be taken. May be filed.

7.7.53

7.7.53

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

डॉ. श्यामा प्रसाद की मां द्वारा तत्कालीन प्रधानमंत्री को लिखे गए पत्र का एक अंश

৭৭ আশুতোষ মুখার্জী রোড
কলিকাতা
৪ঠা জুলাই, ১৯৫৩

প্রিয় শ্রীনেহরু,

আপনার ৩০শে জুন তারিখের চিঠি ডাঃ বিধানচন্দ্র রায় আমার কাছে ২রা জুলাই তারিখে পাঠিয়েছেন।

আপনার সান্ত্বনা ও সমবেদনার জন্য আপনাকে ধন্যবাদ জানাই।

আমার প্রিয় সন্তানের তিরোধানে সমস্ত জাতি শোকমগ্ন। সে শহীদের মৃত্যু বরণ করেছে। আমি তার মা, আমার কাছে এই দুঃখ এত গভীর ও পবিত্র যে তা প্রকাশ করা সম্ভব নয়। আমি আপনার কাছ থেকে কোন সান্ত্বনা পাবার জন্য এ চিঠি লিখছি না। আপনার কাছে আমার যেটা দাবি সেটা হচ্ছে ন্যায়বিচার। আমার পুত্র বন্দীদশায় মারা গেছে—যে বন্দীদশার আগে কোন বিচার হয় নি। আপনার চিঠিতে আপনি বোঝাতে চেষ্টা করেছেন যে, কাশ্মীর সরকারের যা যা করা উচিত ছিল সবই করেছিল। কাশ্মীর সরকার আপনাকে যে সংবাদ দিয়েছে তারই ভিত্তিতে আপনি ও-কথা বলেছেন।

আমি প্রশ্ন করি, যেসব লোকদের নিজেদের বিচারের কাঠগড়ায় দাঁড়ানোর কথা, তাদের কাছ থেকে পাওয়া সেই সংবাদের মূল্য কি? আপনি বলেছেন, আমার পুত্রের বন্দিত্বকালে আপনি কাশ্মীর গিয়েছিলেন। তার প্রতি আপনার ভালবাসা ছিল তাও বলেছেন। আমি জানি না, আপনার তার সঙ্গে দেখা করে তার স্বাস্থ্য ও তার জন্য কিরূপ ব্যবস্থা করা হয়েছে সে সম্বন্ধে খোঁজখবর নিয়ে নিশ্চিন্ত হতে কি বাধা ছিল?

তার মৃত্যু রহস্যাবৃত। এটা কি অত্যন্ত বিস্ময়কর ও আঘাতজনক নয় যে তার বন্দী হওয়ার পরে তার প্রথম সংবাদ কাশ্মীর সরকারের কাছ থেকে আমি তার মা যা পেলাম তা হোল যে আমার ছেলে আর নেই, এবং সে সংবাদও পেলাম সব শেষ হয়ে যাবার দুই ঘণ্টা পরে? আর কি নিষ্ঠুর সংক্ষিপ্ত ভাবেই না সংবাদটি পাঠানো হয়েছিল! হাসপাতালে ভর্তি করার পর আমার পুত্র যে টেলিগ্রাম করেছিল সেটাও আমাদের কাছে এসে পৌঁছল তার নিদারুণ মৃত্যুসংবাদের পর। বন্দী হওয়ার পর থেকেই যে আমার পুত্রের শরীর খারাপ যাচ্ছিল এ ব্যাপারে নিশ্চিত ও সঠিক সংবাদ আছে। সে পর পর কয়েকবারই এবং বেশ কিছুদিনের জন্যে নিশ্চিতভাবেই অসুস্থ হয়ে পড়ে। আমি জিজ্ঞাসা করি, কাশ্মীর সরকার অথবা আপনার সরকার কোন সংবাদই আমাকে বা আমাদের আত্মীয়বর্গের কাউকে পাঠায় নি কেন?

যখন তাকে হাসপাতালে পাঠানো হল, তখনও তারা খবরটি আমাদের বা ডাঃ বিধানচন্দ্র রায়কে অবিলম্বে জানানো প্রয়োজন বোধ করে নি। এটাও দেখা যাচ্ছে যে, কাশ্মীর সরকার শ্যামাপ্রসাদের স্বাস্থ্যের পূর্ব ইতিহাস জানার এবং তার সেবা ও প্রয়োজনের সময়ে আপৎকালীন চিকিৎসার ব্যবস্থা নিতে কোন গা করে নি। তার পুনঃ পুনঃ অসুস্থতার ধাক্কাকেও গুরুত্ব দেওয়া হয় নি। এর ফল হল মারাত্মক। আমি স্পষ্ট সাক্ষ্য প্রমাণ দিয়ে প্রতিপন্ন করতে পারি, আমার পুত্রের নিজের কথাতেই, ২২ তারিখ ভোরবেলায় সে অবসন্ন বোধ করেছিল। আর সরকার কি করেছিলেন? চিকিৎসার ব্যবস্থা হতে অযথা বিলম্ব, অত্যন্ত অবিবেচকের মত ব্যবস্থা করে তাকে হাসপাতালে পাঠানো, হাসপাতালে তার কাছে তার দুই সহবন্দীকেও থাকতে না দেওয়া সংশ্লিষ্ট কর্তৃপক্ষের হৃদয়হীন আচরণের কয়েকটি জ্বলন্ত নিদর্শন।

শ্যামাপ্রসাদের চিঠিগুলি থেকে এলোমেলো ভাবে কতকগুলি বেছে নিয়ে, তার থেকে

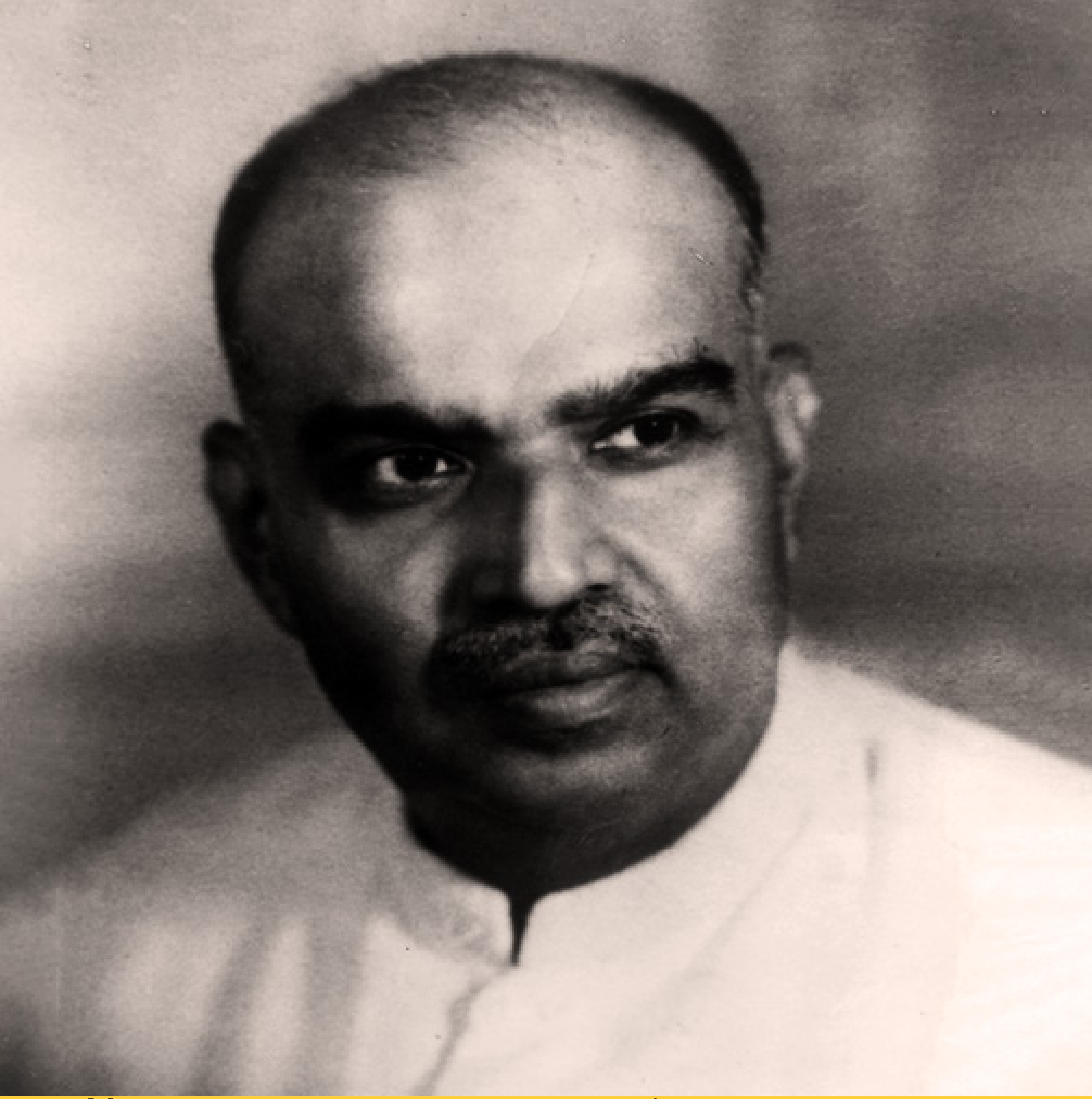

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जीवन एवं उनकी विरासत

(6 जुलाई 1901 - 23 जून 1953)

सत्यमेव जयते
संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार